कक्षा–12 NCERT राजनीति विज्ञान (समकालीन विश्व राजनीति)

अध्याय–04 (सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र) नोट्स

Youtube Channel Name : Siddhi Vinayak Sangaria

Channel Link- https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

Telegram link - https://t.me/siddhivinayaksangariamukesh (Siddhi Vinayak Sangaria)

Political Science Video Playlist Link-

https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU

---

1. तिथि के हिसाब से इन सबको क्रम दें–

(1) विश्व व्यापार संगठन में चीन का प्रवेश
(2) यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना
(3) यूरोपीय संघ की स्थापना
(4) आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना

उत्तर– सही कालक्रम 2 4 3 1

(1) 2. यूरोपीय आर्थिक समुदाय की स्थापना (2) 4. आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना
(3) 3. यूरोपीय संघ की स्थापना (4) 1. विश्व व्यापार संगठन में चीन का प्रवेश

2. 'ASEAN Way' या आसियान शैली क्या है?

(1) आसियान के सदस्य देशों की जीवन शैली हैं।
(2) आसियान सदस्यों के अनौपचारिक और सहयोगपूर्ण कामकाज की शैली को कहा जाता है।
(3) आसियान सदस्यों की रक्षानीति है।
(4) सभी आसियान सदस्य देशों को जोड़ने वाली सड़क है।

3. इनमें से किसने 'खुले द्वार' की नीति अपनाई?

(1) चीन (2) जापान
(3) यूरोपीय संघ (4) अमेरिका

4. खाली स्थान भरें–

(1) वर्ष 1962 में भारत और चीन के बीच **अरुणाचल प्रदेश** और **लद्दाख** को लेकर सीमावर्ती लड़ाई हुई थी।
(2) आसियान क्षेत्रीय मंच के कामों में **आर्थिक विकास तेज करना** और **सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास तेज करना** शामिल है।
(3) चीन ने वर्ष 1972 में **अमेरिका** के साथ दोतरफा संबंध शुरू करके अपना एकांतवास समाप्त किया।
(4) **मार्शल** योजना के प्रभाव से 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना हुई।
(5) **आसियान सुरक्षा समुदाय** आसियान का एक स्तंभ हैं, जो इसके सदस्य देशों की सुरक्षा के मामले देखता है।

5. क्षेत्रीय संगठनों को बनाने के उद्देश्य क्या है?

उत्तर– क्षेत्रीय संगठनों को बनाने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- अपने–अपने क्षेत्रों में चल रहे पुराने मतभेदों को भुलाते हुए क्षेत्रीय कमजोरियों का स्थानीय स्तर पर समाधान ढूँढना।
- अपने–अपने क्षेत्रों में अधिक शांतिपूर्ण और सहकारी क्षेत्रीय व्यवस्था विकसित करने के अतिरिक्त क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं के समूह बनाने एवं उनके विकास करने के लिए क्षेत्रीय संगठन की स्थापना के मुख्य उद्देश्य हैं।

Youtube Channel: Siddhi Vinayak Sangaria

6. भौगोलिक निकटता का क्षेत्रीय संगठनों के गठन पर क्या असर होता है?

उत्तर– भौगोलिक निकटता होने से संबंधित देशों में संगठन की भावना प्रेरित होती है तथा इस भावना के परिणामस्वरूप आपसी संघर्ष और युद्ध के स्थान पर आपसी सहयोग और शांति का विकास होता है। इस प्रकार भौगोलिक निकटता के संगठनों पर पड़ने वाले प्रभाव निम्न हैं–

- राष्ट्रों के बीच अच्छे संबंध होने पर राष्ट्र एक–दूसरे के विकास में सहभागी बन सकते हैं।
- अंतर्देशीय व्यापार के माध्यम से आर्थिक विकास कर सकते हैं और अपने बाजार एक–दूसरे के लिए खोल सकते हैं। कई राष्ट्र मिलकर साझा सड़क मार्ग व रेल सेवा शुरू कर सकते हैं, जो दोनों राष्ट्रों के लिए लाभदायक हो। इसके अतिरिक्त संचार के साधनों का भी साझा उपयोग कर सकते हैं।

7. 'आसियान विजन 2020' की मुख्य बातें क्या हैं?

उत्तर– आसियान तीव्र गति से विकास करने वाला एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन है, जिसने अपने 'विजन–2020' दस्तावेज में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की प्रमुखता दी है।

आसियान ने आपसी संघर्ष के स्थान पर बातचीत के माध्यम को बढ़ावा दिया। इसने कंबोडिया टकराव का अंत एवं पूर्वी तिमोर के संकट का समाधान किया। इसके अतिरिक्त यह पूर्वी एशियाई सहयोग की दिशा में बातचीत हेतु वर्ष 1999 से प्रतिवर्ष वार्षिक बैठक का आयोजन करता है।

8. आसियान समुदाय के मुख्य स्तंभों और उनके उद्देश्यों के बारे में बताइए।

उत्तर– आसियान ने अपनी स्थापना के पश्चात् अपने उद्देश्यों के आर्थिक और सामाजिक दायरे को व्यापक बनाते हुए काफी विस्तार किया। इस दिशा में आसियान ने वर्ष 2003 में आसियान सुरक्षा समुदाय, आसियान आर्थिक समुदाय एवं आसियान सामाजिक सांस्कृतिक समुदाय के रूप में तीन स्तंभों का गठन किया। आसियान सुरक्षा समुदाय का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय विवादों को बिना सैन्य टकराव के आपसी सहमति एवं बातचीत के माध्यम से हल करना है। आसियान देशों की सुरक्षा और विदेश नीतियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए वर्ष 1994 में आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना की गई। आसियान आर्थिक समुदाय का उद्देश्य आसियान देशों के लिए साझा बाजार और उत्पादन आधार तैयार कर आसियान के सामाजिक–सांस्कृतिक समुदाय के विकास में सहयोग करना है।

9. आज की चीनी अर्थव्यवस्था नियंत्रित अर्थव्यवस्था से किस तरह अलग है?

उत्तर– नियंत्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि दर धीरे–धीरे बढ़ती है, जबकि चीन ने जिस तीव्र गति से आर्थिक वृद्धि की है व विकसित देशों को भी आर्थिक विकास में पीछे छोड़ दिया है, वह नियंत्रित अर्थव्यवस्था में संभव नहीं है। वर्ष 1949 में चीन में हुई साम्यवादी क्रांति के बाद चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था का विकास सोवियत मॉडल पर किया। इस विकास मॉडल में कृषि से पूँजी निकालकर सरकारी नियंत्रण एवं बड़े उद्योग लगाए गए हैं, किंतु इस राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था में चीन पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाया। 1970 के दशक में चीन सरकार ने अपनी नीति में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए।

इस नीति के अंतर्गत चीन ने आर्थिक सुधारों हेतु खुले द्वार की नीति अपनाई। इसमें विदेशी पूँजी और प्रौद्योगिकी के निवेश से उच्चतर उत्पादकता को प्राप्त किया। बाजारमूलक अर्थव्यवस्था को चीन ने अपने तरीके से अपनाया और चीनी अर्थव्यवस्था ने तीव्र गति से विकास किया।

10. किस तरह यूरोपीय देशों ने युद्ध के बाद की अपनी परेशानियाँ सुलझाई? संक्षेप में उन कदमों की चर्चा करें, जिनसे होते हुए यूरोपीय संघ की स्थापना हुई।

उत्तर– द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अनेक यूरोपीय नेताओं ने अपने मतभेदों को. भुलाते हुए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक सहयोग और नवीन सिद्धांतों व संस्थाओं की दिशा में अनेक कदम उठाए तथा आपसी संबंधों को पुनः परिभाषित किया। यूरोपीय अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में मार्शल योजना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूरोपीय संघ की स्थापना क्रमिक रूप से विभिन्न चरणों का परिणाम थी, जो निम्न प्रकार से है–

- अमेरिका ने 'नाटो' के तहत एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया।
- वर्ष 1948 में मार्शल योजना के तहत 'यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन' की स्थापना की गई, जिसका

YouTube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

उद्देश्य पश्चिमी यूरोप के देशों को आर्थिक मदद देना था।

- वर्ष 1949 में एक दूसरे देश के राजनीतिक सहयोग हेतु 'यूरोपीय परिषद्' गठित की गई।
- इसके अगले चरण (वर्ष 1957) के रूप में 'यूरोपियन इकोनॉमिक कम्युनिटी' का गठन किया गया।
- इसके पश्चात् 'यूरोपियन पार्लियामेंट' का गठन किया गया।
- इन सभी प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप वर्ष 1992 में 'यूरोपीय संघ' की स्थापना हुई।

11. यूरोपीय संघ को क्या चीजें एक प्रभावी क्षेत्रीय संगठन बनाती हैं?

अथवा

यूरोपीय संघ के अति प्रभावशाली संगठन वाले किन्हीं चार कारकों की व्याख्या कीजिए।

अथवा

यूरोपीय संघ के अति प्रभावशाली क्षेत्रीय संगठन बनने के लिए उत्तरदायी किन्हीं तीन कारकों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर– यूरोपीय संघ का आर्थिक, राजनैतिक, कूटनीतिक तथा सैन्य शक्ति के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव है। इसे निम्न तथ्यों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था 2005 में विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी तथा इसका सकल घरेलू उत्पादन 12000 अरब डॉलर था, जो अमेरिका के GDP से भी अधिक था। इसके अतिरिक्त विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी अमेरिका से तीन गुना अधिक थी।

यूरोपीय संघ की आर्थिक शक्ति का प्रभाव केवल यूरोप में ही नहीं, बल्कि एशिया और अफ्रीका के देशों पर भी है।

ब्रिटेन और फ्रांस सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य हैं, जोकि यूरोपीय संघ के सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त संघ के कई अन्य देश सुरक्षा परिषद् के अस्थायी सदस्य हैं, जिसके कारण यूरोपीय संघ अमेरिका व अन्य देशों की नीतियों को प्रभावित करता है।

चीन के साथ मानवाधिकारों के उल्लंघन और पर्यावरण विनाश के मुद्दों पर यूरोपीय संघ ने धमकी या सैनिक शक्ति का उपयोग करने के स्थान पर कूटनीति, आर्थिक निवेश तथा बातचीत जैसी प्रभावकारी रणनीति को अपनाया।

यूरोपीय संघ की सैन्य शक्ति विश्व की दूसरी सबसे बड़ी शक्ति है, जिसका कुल रक्षा बजट अमेरिका के पश्चात् सबसे अधिक है। इसके दो सदस्य देशों–ब्रिटेन और फ्रांस के पास लगभग 550 परमाणु हथियार हैं। इसके अतिरिक्त अंतरिक्ष विज्ञान और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यूरोपीय संघ विश्व में दूसरे स्थान पर है। उपरोक्त सभी चीजें यूरोपीय संघ को एक प्रभावी क्षेत्रीय संगठन बनाती हैं।

12. चीन और भारत की उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मौजूदा एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था को चुनौती दे सकने की क्षमता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने तर्कों से अपने विचारों की पुष्टि करें।

उत्तर– भारत और चीन एशिया की तेजी से विकास कर रही दो अर्थव्यवस्थाएँ हैं। इन दोनों देशों के पास मौजूदा एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था को चुनौती दे सकने की क्षमता है। इस विचार के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं।

- भारत और चीन के पास विशाल भू–क्षेत्र के अतिरिक्त विशाल जनसंख्या है, जो मानव संसाधन के रूप में पूँजी है एवं साथ–ही–साथ विशाल बाजार भी है, जो अमेरिका आदि देशों के लिए अपने उत्पादों की खपत का स्थान है। इसके अतिरिक्त ये सस्ता श्रम उपलब्ध कराते हैं।
- भारत व चीन दोनों ही मुक्त व्यापार नीति, उदारीकरण, वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के पक्षधर हैं।
- भारत और चीन विज्ञान, प्रौद्योगिकी व तकनीकी क्षेत्र में अपने ज्ञान का आदान–प्रदान कर प्रगति को बढ़ा सकते हैं।
- भारत और चीन पारस्परिक सहयोग और आदान–प्रदान की नीति अपनाकर कई क्षेत्रों में एक–दूसरे को सहयोग दे सकते हैं। जैसे–सड़क निर्माण जैसी सुविधाएँ आदि। ये दोनों देश एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria

के लिए चुनौती भरे होंगे।

13. *"मुल्कों की शांति और समृद्धि क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों को बनाने और मजबूत करने पर टिकी है।"* इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर– क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों को बनाने एवं उनकी मजबूती के आधार पर ही देशों की शांति और समृद्धि निर्भर करती है। इस कथन की पुष्टि निम्न तथ्यों के द्वारा की जा सकती है–

- क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों को बनाए जाने का उद्देश्य आर्थिक विकास करना और उसके माध्यम से सामाजिक–सांस्कृतिक विकास करना है।
- इसके अतिरिक्त इन संगठनों द्वारा संबंधित क्षेत्र में शांति, परस्पर सहयोग एवं स्थायित्व को बढ़ावा देना है।
- उदाहरण स्वरूप; यूरोपीय संघ और दक्षिण–पूर्वी एशियायी देशों का संगठन (आसियान) ऐसे प्रमुख संगठन हैं, जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्रों में आपसी मतभेदों को भुलाते हुए जर्जर अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण हेतु क्षेत्रीय स्तर पर समाधान ढूँढा। कालांतर में दोनों क्षेत्रीय संगठनों ने क्षेत्रीय शांति को बढ़ावा देते विकास के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया। अतः उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रों की शांति और समृद्धि में क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों का होना आवश्यक है।

14. भारत और चीन के बीच विवाद के मामलों की पहचान करें और बताइए कि वृहत्तर सहयोग के लिए इन्हें कैसे निपटाया जा सकता है? अपने सुझाव भी दीजिए।

उत्तर– भारत और चीन के बीच विवादित मुद्दे निम्नलिखित हैं–

- कुछ लोगों द्वारा वर्ष 1998 में भारत के परमाणु हथियार परीक्षण को चीन से खतरे के संदर्भ में उचित ठहराया जाना।
- पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम में चीन द्वारा सहायता किया जाना, जिसे सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं माना जाता है।
- इसके अतिरिक्त बांग्लादेश और म्यांमार से चीन के सैनिक संबंधों को दक्षिणी एशिया में भारतीय हितों के विरुद्ध माना जाता है।

इन सभी विवादित मुद्दों के बावजूद दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के हल हेतु द्विपक्षीय वार्ता और सैन्य सहयोग कार्यक्रम जारी है। अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों देशों के मध्य विवादित मुद्दों का हल शांतिपूर्ण माहौल में आपसी बातचीत द्वारा ही निकाला जा सकता है। यह बातचीत आपसी सहयोग व सकारात्मक उद्देश्यों के साथ होनी चाहिए, जो दोनों देशों के लिए हितकारी होगा।

Class – 12th NCERT राजनीति विज्ञान के प्रत्येक अध्याय को अच्छे से समझने के लिए सिद्धि विनायक संगरिया यू–ट्यूब चैनल पर आप वीडियो देखें। इसके लिए आपको चैनल की प्ले–लिस्ट NCERT POL SCIENCE|2021-22|Class 12 (https://www.youtube.com/watch?v=T1_JmzbsaAM&list=PLIlq5TfwxGWF7iVqpMJgSuc6OVr8kERaU) में अध्यायवार सभी वीडियो एकसाथ मिलेंगे। आप भी पढ़ें और अपने साथियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद

सिद्धि विनायक संगरिया टीम

Youtube Channel : Siddhi Vinayak Sangaria